ISSN 0972-7280

पूसा समाचार

खंड 32, अंक 3 जुलाई-सितम्बर, 2016

अनुसंधान

मृदा में *टिलेसिया इंडिका* के टेलियोस्पोर की संख्या का पता लगाने व उनका मात्रात्मक निर्धारण के लिए वास्तविक समय पीसीआर मूल्यांकन का विकास एवं सत्यापन

मृदा में टेलियोस्पोर का पता लगाने व उनका मात्रात्मक निर्धारण करने के लिए वास्तविक समय पीसीआर मूल्यांकन की विधि विकसित करके मानकीकृत की गई। qPCR मार्कर की संवेदनशीलता 100 fg. थी। करनाल व हरियाणा की खेत की मिट्टी में निम्न कवकीय डीएनए (15135.61 fg) का पता चला, जबकि भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली की खेत की मृदा में डीएनए सांद्रता (3.31 ng) उच्च पाई गई। *टी. इंडिका* की 125.89 fg डीएनए सांद्रता 14 टेलियोस्पोर की सम्बद्ध सीमा के रूप में पहचानी गई जो न्यूनतम है। सुक्रोज अपकेन्द्रीकरण विधि से करनाल और भा.कृ.अ.सं. के फार्म की मृदाओं से प्राप्त किए गए टेलियोस्पोर की संख्या क्रमशः 450 और 1341 थी, जबकि विश्लेषण के आधार पर qPCR मूल्यांकन से टेलियोस्पोर की उच्च संख्या का पता चला जो 1762 से 368332 टेलियोस्पोर के बीच थी। विकसित किए गए इस qPCR नैदानिक मार्कर का उपयोग मृदा में टेलियोस्पोर की सटीक, विश्वसनीय और त्वरित पहचान के लिए किया जा सकता है जिससे मृदा में संरोप के टेलियोस्पोरिक भार तथा थ्रेशहोल्ड की निगरानी व उसके मात्रात्मक निर्धारण में और अधिक सहायता मिलेगी।

बे–मौसमी ककड़ी उत्पादन से उच्च आय

ककड़ी परंपरागत रूप से गर्मियों के महीनों, मार्च–जुलाई के दौरान नदी के किनारे उगाई जाती है परन्तु प्रतिकूल जलवायु के कारण इसे कभी भी बे–मौसम (अगस्त–फरवरी के दौरान) खुली स्थितियों के अंतर्गत उगाना कठिन है। उत्पादन में इस मौसमी अंतराल को दूर करने के लिए दस्ती या मधुमक्खी द्वारा परागण का उपयोग करके संरक्षित संरचना के अंतर्गत इसकी फसल बे–मौसम में भी उगाई जा सकती है। सीपीसीटी फार्म, भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली में बे–मौसमी ककड़ी की किस्म स्वीटी के प्राकृतिक रूप से वातायित पॉलीहाउस में उत्पादन के लिए इसकी रोपाई अगस्त में की गई। ड्रिप सिंचाई सहित सस्यविज्ञानी विधियों के अनुशंसित पैकेज का उपयोग किया गया ताकि इसकी पूर्ण उत्पादन क्षमता का लाभ उठाया जा

बे–मौसमी ककड़ी का उत्पादन

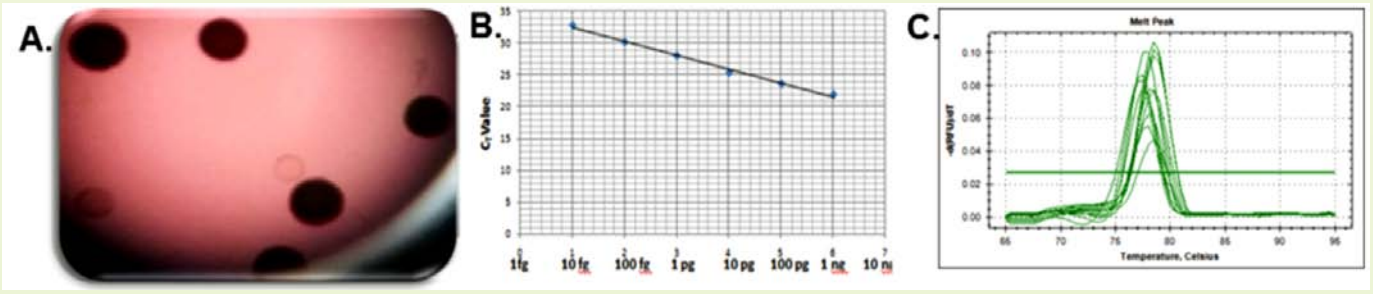

A. करनाल बंट : टेलियोस्पोर; B. मानक वक्र; X-अक्ष दर्शाने वाले $\log_{10}$ डीएनए की मात्रा (fg) qPCR चक्र थ्रेशहोल्ड के विरुद्ध प्लॉट किया गया (Ct); तथा C. qPCR उत्पादों का गलन वक्र

सके। धूप से बचाने के लिए पर्दे/छाया जाल व छत तथा पार्श्व के वातायनों में प्लास्टिक के खुल सकने/बंद हो सकने वाले पर्दे लगाकर नियंत्रित तापमान (18–30° से.), सापेक्ष आर्द्रता (55–75%), धूप की गहनता (50–75%) और वातायन (75–80%) बनाए रखे गए। दस्ती परागण सूर्योदय के 4 घंटे के अंदर प्रतिदिन सुबह के समय किया गया। इस विधि से औसतन 360 ग्रा. भार, 85.50 सें.मी. लंबे और 3.50 सें.मी. व्यास के चार फल प्राप्त किए गए। इस प्रकार, 6.50 कि.ग्रा./मी.^{2} की श्रेष्ठ गुणवत्ता वाली उपज प्राप्त हुई। इस प्रकार की खेती की लागत ₹140/मी.^{2} आई। इससे होने वाला निवल लाभ ₹100/मी.^{2} था तथा लाभ लागत अनुपात 1:1.71 था। ग्रीष्मकालीन ककड़ी का मूल्य ₹15/कि.ग्रा. होता है जबकि बे–मौसम में इसका मूल्य ₹40/कि.ग्रा. होता है जिससे यह संकेत मिलता है कि सुरक्षित संरचनाओं के अंतर्गत बे–मौसमी ककड़ी की खेती करने से इसके उत्पादकों को अधिक लाभ प्राप्त हो सकता है।

शिक्षा

शिक्षक दिवस व्याख्यान 2016

महान शिक्षक, दार्शनिक, परोपकारी तथा भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन के सम्मान में संस्थान के डॉ. बी.पी. पॉल सभागार में 5 सितम्बर 2016 को शिक्षक दिवस व्याख्यान 2016 आयोजित किया गया। डॉ. आर.के. जैन, अधिष्ठाता एवं संयुक्त निदेशक (शिक्षा) ने अतिथियों का स्वागत किया तथा शिक्षक दिवस व इस व्याख्यानमाला के महत्व पर बल दिया। डॉ. रविन्द्र कौर, निदेशक (कार्यवाहक) ने कार्यक्रम के अध्यक्ष, (पूर्व कुलपति, सरदार वल्लभ भाई पटेल, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ) डॉ. एच.एस. गौड़ का सभी उपस्थितजनों से परिचय कराया। डॉ. एन.एस. राठौर, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.कृ.अ.प. ने 'भारत में कृषि शिक्षा में हुई नवीनतम प्रगतियां' विषय पर शिक्षक दिवस व्याख्यान दिया। डॉ. राठौर ने कृषि क्षेत्र के महत्व पर बल दिया जो देश के कुल कार्य बल में 50 प्रतिशत से अधिक का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान करता है। उन्होंने सृजनशील कुशलता, सोचने की क्षमता तथा नेतृत्व का उद्यम संबंधी भूमिकाओं के माध्यम से कृषि क्षेत्र की उत्पादकता को सुधारने पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने श्रोताओं को भा.कृ.अ.प. की छात्र 'रेडी' (ग्रामीण उद्यमशीलता व जागरूकता विकास योजना) के बारे में भी बताया। समारोह के अध्यक्ष डॉ. एच.एस. गौड़ ने भारत में कृषि शिक्षा के क्षेत्र में की जा रही नई पहलों की प्रशंसा की और कहा कि इससे नई आशा सृजित हुई है क्योंकि यह अनुसंधान के क्षेत्र में नया प्रकाश ला सकता है। कार्यक्रम का समापन डॉ. विनोद, प्राध्यापक, आनुवंशिकी संभाग के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

डॉ. एन.एस. राठौर, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.कृ.अ.प. शिक्षक दिवस व्याख्यान–2016 देते हुए

पादप रोगविज्ञान संभाग में व्याख्यान का आयोजन

प्रो. काप्पेई कोबायाशी, पादप आण्विक जीवविज्ञान एवं विषाणुविज्ञान, कृषि संकाय, इहिमे विश्वविद्यालय, जापान ने 21 सितम्बर 2016 को पादप रोगविज्ञान संभाग में 'पादप रोगों में लक्षण अभिव्यक्ति : रोग सहिष्णुता के विकास के लिए यांत्रिकी को समझना' विषय पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने भारत–जापान सहयोगी विज्ञान कार्यक्रम (डीएसटी – जेएसपीएस संयुक्त अनुसंधान परियोजना) के अंतर्गत संभाग का दौरा भी किया।

प्रसार

प्रदर्शनियों में भागीदारी

संस्थान के कृषि प्रौद्योगिकी, आकलन एवं हस्तांतरण केन्द्र (कटैट) ने निम्न प्रदर्शनियों में कृषकों के लिए उत्पादों और प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन हेतु भा.कृ.अ.सं. के स्टाल लगाते हुए भाग लिया।

- प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 22 से 24 जुलाई 2016 को आयोजित 'खाद्य एवं प्रौद्योगिकी एक्सपो–2016'।
- प्रगति मैदान, नई दिल्ली में 11 से 13 अगस्त 2016 को 'तृतीय भारतीय अंतरराष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यमियों (एमएसएमई) एक्सपो एवं शिखर सम्मेलन 2016'।
- वाईएफए परिसर, राखडा, पंजाब में 11 सितम्बर 2016 को आयोजित 'किसान मेला'।
- मथुरा, उत्तर प्रदेश में 26 से 29 सितम्बर 2016 को 'कृषि प्रदर्शनी एवं गोष्ठी'।

❖ यूएएस, धारवाड़ में 25 से 27 सितम्बर 2016 को 'किसान मेला'।

फार्म नवोन्मेषी सम्मेलन–2016

संस्थान में 27 सितम्बर 2016 को एक दिवसीय फार्म नवोन्मेषी सम्मेलन–2016 आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. ए.के. सिंह, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.कृ.अ.प. मुख्य अतिथि थे तथा डॉ. रविन्द्र कौर, निदेशक (कार्यवाहक), भा.कृ.अ.सं. ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की। तकनीकी सत्रों में किसानों के नवोन्मेषों, बाजार संबंधी नवोन्मेषों, जैविक खेती, उपयुक्ततम उत्पादन, पुष्पों की खेती, विविधीकृत कृषि एवं बीजोत्पादन पर प्रस्तुतीकरण दिए गए। नवोन्मेषी किसानों ने अन्य प्रतिभागियों के साथ अपने अनुभव बांटे तथा कृषकों द्वारा तैयार की गई प्रौद्योगिकियों के प्रचार–प्रसार के लिए अपनाई जाने वाली क्रियाविधियों पर चर्चा की। कृषक एवं अनुसंधान संस्थाओं का नेटवर्क तैयार करने के लिए उचित ढांचे के साथ इस सम्मेलन में 80 से अधिक नवोन्मेषी किसानों ने भाग लिया।

फार्म नवोन्मेषी सम्मेलन–2016

भा.कृ.अ.सं.–स्वयंसेवी संगठन साझेदारी कार्यशाला 2016

कार्यशालाओं का आयोजन

❖ रबी 2015–16 और खरीफ 2016 के दौरान प्रदर्शनों के अंतर्गत फसलों/प्रौद्योगिकियों के निष्पादन की समीक्षा के लिए 28 सितम्बर 2016 को भा.कृ.अ.सं.–स्वयंसेवी संगठनों (वीओ) के बीच साझेदारी के आउटरीच कार्यक्रम की एक कार्यशाला आयोजित की गई। रबी 2015–16 के दौरान कुल 171 हैक्टर क्षेत्र में स्वयंसेवी संगठनों की साझेदारी में 8 फसलों की 21 किस्मों के कुल 572 प्रदर्शन आयोजित किए गए। इस अवसर पर डॉ. जे.पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार) ने इस बात पर बल दिया कि भा.कृ.अ.सं. की प्रौद्योगिकियों के मूल्यांकन से प्राप्त परिणाम देश के अन्य भागों में टिकाऊ प्रौद्योगिकियों के क्षैतिज प्रसार में दूर–दूर तक सहायक सिद्ध होंगे। डॉ. के.वी. प्रभु, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) ने यह परामर्श दिया कि यह कार्यक्रम बीजोत्पादन में पहल के साथ–साथ उच्च स्तर के सहयोग से चलाया जाना चाहिए। स्वयंसेवी संगठनों से आए साझेदारों ने अपनी उपलब्धियां प्रस्तुत कीं तथा अपने–अपने संबंधित क्षेत्रों में भा.कृ.अ.सं. की प्रौद्योगिकियों के प्रचार–प्रसार का फीडबैक प्रस्तुत किया। यह निर्णय लिया गया कि स्वयंसेवी संगठन साझेदार कृषक उत्पादन कंपनियों का निर्माण करके बीजोत्पादन की दिशा में पहल कर सकते हैं और इस प्रकार बीजोत्पादन कार्यक्रम को टिकाऊ बना सकते हैं।

❖ दिनांक 29 सितम्बर 2016 को प्रसार कार्य में हुई प्रगति तथा भावी योजना पर चर्चा करने के लिए भा.कृ.अ.प. के संस्थानों/राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के सहयोग से नोडल अधिकारियों के लिए भा.कृ.अ.सं. के राष्ट्रीय प्रसार कार्यक्रम (एनईपी) पर एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गई। डॉ. जे.पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार) ने यह सुझाव दिया कि सभी साझेदारों को पांच वर्षों के मूल्यांकन के आधार पर सभी सफल स्थान विशिष्ट प्रौद्योगिकियों को विस्तार से प्रलेखित करना चाहिए। राष्ट्रीय प्रसार कार्यक्रम या एनईपी के साझेदारों ने वर्ष 2015–16 के दौरान हुई अपनी–अपनी

नोडल अधिकारियों के लिए एनईपी कार्यशाला

उपलब्धियां प्रस्तुत की तथा अगले रबी व खरीफ मौसमों के लिए कार्यक्रम तैयार करने के साथ–साथ कुछ नए व उपयोगी सुझाव भी दिए। निर्णय लिया गया कि साझेदारी संस्थान अपने लिए अलग से गांवों को गोद ले सकते हैं ताकि उन्हें आदर्श बीज ग्रामों के साथ विकसित किया जा सके, वहां के किसानों को बाजारों से जोड़ा जा सके, वहां के किसानों की सफलता की कहानियों में व किसानों द्वारा की गई नई–नई खोजों के मामले में साझेदारी की जा सके।

क्षमता निर्माण

प्रशिक्षण

❖ 20 प्रसार कर्मियों व प्रगतिशील किसानों के बैच के लिए संस्थान के कृषि प्रौद्योगिकी आकलन एवं हस्तांतरण केन्द्र (कटैट) में आठ परिसर प्रशिक्षण आयोजित किए गए जो इस प्रकार हैं : (i) 1 जुलाई 2016 को 'जैविक खेती तथा इसका प्रमाणीकरण'; (ii) 14 जुलाई 2016 को 'श्रेणीकरण, पैकिंग और सस्योत्तर प्रबंध'; (iii) 2 अगस्त 2016 को 'पुष्प और सब्जियों के लिए श्रेष्ठ कृषि विधियां'; (iv) 17 अगस्त 2016 को 'प्याज व लहसुन की उत्पादन प्रौद्योगिकी तथा उनका चिकित्सीय मूल्य'; (v) 24 अगस्त 2016 को 'जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि का विविधीकरण'; (vi) 8 सितम्बर 2016 को 'सब्जियों और फलों का परिरक्षण'; (vii) 22 सितम्बर 2016 को 'खाद्य सुरक्षा एवं गुणवत्ता के लिए नाशकजीवनाशियों का सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग'; और (viii) 19 से 24 सितम्बर 2016 तक 'उच्चतर उत्पादकता एवं आय के लिए उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियां'।

❖ संस्थान के शिकोहपुर स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके) द्वारा पांच व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। (i) गुडगांव जिले के जतौला गांव में 21 से 27 जुलाई 2016 को 'न्यूट्रिफार्म की स्थापना' (20 खेतिहर महिलाओं ने भाग लिया); (ii) 2 से 12 अगस्त 2016 को गुड़गांव जिले में 'पादप सुरक्षा एवं नाशकजीव नियंत्रण सेवाएं' (16 ग्रामीण युवाओं ने भाग लिया); (iii) 1 से 9 सितम्बर 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में 'सोयाबीन और बाजरा में मूल्यवर्धन' (15 महिलाओं ने भाग लिया); (iv) 14 से 22 सितम्बर 2016 को 'मधुमक्खी पालन' (गुड़गांव जिले से आए 40 ग्रामीण युवाओं ने भाग लिया); (v) 14 से 24 सितम्बर 2016 को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में 'डेरी फार्मिंग' (विभिन्न गांवों से आए 15 युवाओं ने भाग लिया)। कृषि विज्ञान केन्द्र ने प्रसार कर्मियों के लिए भी दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जो इस प्रकार हैं : (i) दिनांक 30 अगस्त 2016 को गुड़गांव जिले के आंगनवाड़ी कर्मियों के लिए मानेसर (गुड़गांव) में 'गर्भवती महिलाओं के लिए पोषण' (17 आंगनवाड़ी कर्मियों ने भाग लिया); और (ii) दिनांक 9 सितम्बर 2016 को हरियाणा कृषि विभाग के सहायक विकास अधिकारियों (एडीओ) के लिए 'रबी फसलों में समेकित नाशकजीव प्रबंध (आईपीएम)' (29 एडीओ ने भाग लिया)।

'मधुमक्खी पालन' पर व्यावसायिक प्रशिक्षण देते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय–वस्तु विशेषज्ञ

विविध

बाह्य निधि सहायता प्राप्त स्वीकृत परियोजनाएं

- एसएसी (इसरो) द्वारा निधि सहायता प्राप्त 'किसानों के लिए अगेती चेतावनी हेतु उपग्रह आधारित मूल्यवर्धित कृषि–मौसमी उत्पाद' शीर्षक की एसएसी–ईओएएम परियोजना के अंतर्गत 'स्थानिक पैमाने पर समेकित प्रबंध के लिए प्रमुख फसलों के नाशकजीवों की पूर्व चेतावनी'; राशि : तीन वर्ष के लिए ₹ 7.52 लाख; प्रधान अन्वेषक डॉ. अमरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एकेएमयू।
- पीपीवी और एफआर प्राधिकरण द्वारा निधि सहायता प्राप्त 'ब्रोकोली के लिए डीयूएस परीक्षण दिशानिर्देशों का विकास' विषय पर परियोजना; राशि : दो वर्ष के लिए ₹ 18 लाख; प्रधान अन्वेषक : डॉ. प्रीतम कालिया, प्रधान वैज्ञानिक, सब्जी विज्ञान संभाग।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा निधि सहायता प्राप्त 'हिमाचल प्रदेश में किन्नौर व लाहोल स्पिति के आदिवासी क्षेत्रों में सेब के लिए विषाणु मुक्त श्रेष्ठ मातृ ब्लॉक की स्थापना' विषय पर परियोजना; राशि : तीन वर्ष के लिए ₹ 26.30 लाख; प्रधान अन्वेषक : डॉ. संतोष वटपाडे, वैज्ञानिक, भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र, शिमला।
- एमएसएमई एसएसी (इसरो) द्वारा निधि सहायता प्राप्त 'सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमियों (एमएसएमई) के लिए आईपी सुविधक केन्द्र' विषय पर परियोजना; राशि : तीन वर्ष के लिए ₹ 65.00 लाख प्रधान अन्वेषक : डॉ. नीरू भूषण, प्रभारी, जैडटीएम और बीपीडी इकाई।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा निधि सहायता प्राप्त 'स्वपात्रे या RNAi प्रौद्योगिकियों के माध्यम से वाणिज्यिक रूप से महत्वपूर्ण पुष्पन पौधे, सूत्रकृमि प्रतिरोधी रजनीगंधा (पोलिएंथस ट्यूबरोजे लिन) का उत्पादन' विषय पर परियोजना; राशि : तीन वर्ष के लिए ₹ 30.42 लाख; प्रधान अन्वेषक : डॉ. एम. जयंती, प्रधान वैज्ञानिक, सूत्रकृमिविज्ञान संभाग।
- मैसर्स बीज शीतल सीड प्राइवेट लिमिटेड, जालना, महाराष्ट्र द्वारा निधि सहायता प्राप्त 'बीटी बैंगन संकरों के जैव सुरक्षा संबंधी अनुसंधान परीक्षण' विषय पर परियोजना; राशि : एक वर्ष के लिए ₹ 34.20 लाख; प्रधान अन्वेषक : डॉ. ए. डी. मुंशी, प्रधान वैज्ञानिक, सब्जी विज्ञान संभाग।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा निधि सहायता प्राप्त 'आरएनए साइलेंसिंग के पादप विषाण्विक सप्रेसर द्वारा लक्षण अभिव्यक्ति को रेखांकित करने के लिए आण्विक यांत्रिकियां' विषय पर संयुक्त अनुसंधान परियोजना (भारत–जापान सहयोगी विकास कार्यक्रम); राशि : दो वर्ष के लिए ₹ 2.50 लाख; प्रधान अन्वेषक : डॉ. बिकाश मंडल, प्रधान वैज्ञानिक, पादप रोगविज्ञान संभाग।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा निधि सहायता प्राप्त 'उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियों का प्रभाव' विषय पर परियोजना; राशि : वर्ष 2016–17 के लिए ₹ 21.00 लाख; प्रधान अन्वेषक : डॉ. नीरू भूषण, प्रभारी, जैडटीएम एवं बीपीडी इकाई।

दाखिल किए गए पेटेंट

- पशु आहार क्रशर
- यूरिया सीरे खनिज का ब्लॉक बनाने का यंत्र
- ट्राइकोडर्मा हार्जीएनम के कामचलाऊ–विलगन की ठोस अवस्था के अंतर्गत अगेती व गहन बीजाणुजनन के लिए संघटन।
- सैमफंगिन : एक नया कवकनाशी तथा इसके निर्माण की प्रक्रिया।
- एमआईपीएस जीन अभिव्यक्ति के शमन के लिए पादप रूपांतरण वाहक तथा निम्न फाइटेट युक्त सोयाबीन का कल्चर तैयार करने की विधि

वाणिज्यीकृत प्रौद्योगिकियां

इस तिमाही के दौरान भा.कृ.अ.सं. की कुल 29 प्रौद्योगिकियां वाणिज्यीकृत की गईं : नामतः गेहूं–एचडी 3086, कम्पोस्ट

एराइज 2016 में व्यापार योजना प्रस्तुत करते हुए प्रतिभागी

संरोप के लिए जैव–उर्वरक प्रौद्योगिकी, सब्जियों की किस्में जैसे चुकंदर – डेट्रॉइट डार्क रैड (डीडीआर), बैंगन–पूसा अनुपम, फूलगोभी– पूसा शरद, फूलगोभी–पूसा स्नोबाल के–25, गाजर–पूसा रूधिरा, गांठ गोभी – व्हाइट वियना, सलाद–ग्रेट लेक्स, सरसों– पूसा साग, भिण्डी–ए 4, पालक–पूसा हरित, मूली – जापानीज़ व्हाइट, चप्पनकद्दू– आस्ट्रेलियन ग्रीन, शलगम–पर्पल टॉप व्हाइट ग्लोब (पीटीडब्ल्यूजी), तरबूज– सुगर बेबी, तोरई–पूसा नूतन, चिचिंडा– पूसा स्नेहा, लौकी– पूसा संतुष्टि, लौकी– संदेश, करेला–पूसा समृद्धि, करेला–पूसा विशेष, लोबिया, पूसा सुकोमल, बथुआ–पूसा 1, मिर्च–पूसा सदाबहार, खरबूजा–पूसा मधुरस, प्याज–पूसा रिद्धि, कद्दू–पूसा विकास, चौलाई–पूसा लाल चौलाई, इनके लिए पांच उद्योग साझेदारों को लाइसेंस दिए गए और इस प्रकार कुल ₹ 3,88,000 का राजस्व सृजित हुआ।

कारपोरेट सदस्यता

इस तिमाही के दौरान 23 नए सदस्य पंजीकृत किए गए तथा 9 कारपोरेट सदस्यताओं का नवीकरण किया गया और इस प्रकार कुल ₹ 1,53,000 का राजस्व सृजित हुआ।

एराइज 2016 : कृषि – स्टार्टअप्स के लिए लांचपेड

भारत के उभरते हुए कृषि व्यापार नवोन्मेष पारिस्थितिक तंत्र से कृषि व्यापार नेताओं की अगली पीढ़ी की पहचान हेतु मंच उपलब्ध कराने के लिए जैडटीएम और बीपीडी इकाई द्वारा 'एराइज 2016 कृषि–स्टार्टअप्स के लिए लांचपेड' का शुभारंभ किया गया, जिसके अंतर्गत इन कृषि व्यापार अग्रणी व्यक्तियों को क्षमता निर्माण का अवसर दिया जाएगा ताकि वे नए–नए विचारों के आधार पर व्यापार के व्यावहारिक मॉडल सैट कर सकें। ऑन लाइन आवेदन आमंत्रित किए गए तथा भारतभर से लगभग 500 व्यापार प्रस्ताव प्राप्त हुए। स्वतंत्र विशेषज्ञों को शामिल करते हुए ऑन लाइन मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से प्रस्तावों की पूर्व छंटाई की गई तथा विशेषज्ञ पैनल के समक्ष 'एराइज' चयन दिवस आयोजन में 17 सितम्बर 2016 को प्रस्तुतीकरण के लिए 60 सक्षम विस्तार प्रस्तावों को चुना गया। इनमें से भा.कृ.अ.सं. के जैडटीएम और बीपीडी इकाई में एराइज इन्क्यूबेशन कार्यक्रम के लिए 22 व्यापार प्रस्ताव चुने गए।

कृषि–व्यापार इन्क्यूबेशन कार्यशाला

मूल व्यवसायों जैसे ईपीसी, कंपनी का निर्माण, वित्तीय परिप्रेक्ष्य, विपणन कार्यनीतियां, लेखाकरण, कर नियोजन से युक्त स्टार्टअप आरंभ करने के लिए जैडटीएम और बीपीडी इकाई द्वारा 18 से 24 सितम्बर 2016 तक 7 दिवसीय कृषि व्यापार इन्क्यूबेशन का आयोजन किया गया ताकि प्रतिभागी अपने संबंधित क्षेत्र पर ध्यान दे सकें तथा कृषि क्षेत्र के प्रतिष्ठित मेंटरों / विशेषज्ञों के साथ आमने–सामने परिचर्चा कर सकें।

हिन्दी चेतना मास 2016

संस्थान में 1 से 30 सितम्बर 2016 को हिन्दी चेतना मास मनाया गया। डॉ. के.वि. प्रभु, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) ने सेस्करा सभागार में 1 सितम्बर 2016 को आयोजित हिन्दी चेतना मास समारोह का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विभिन्न विषयों पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस माह के दौरान अन्य हिंदी प्रतियोगिताएं भी आयोजित हुईं जैसे टिप्पण एवं मसौदा लेखन, हिन्दी काव्य पाठ, सामान्य ज्ञान, हिंदी अनुवाद, आशु भाषण, प्रश्न मंच, वाद–विवाद, श्रुतलेख व हिन्दी में कम्प्यूटर पर टंकण। इन कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक स्टाफ ने अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लिया। हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता संस्थान में इस वर्ष प्रथम बार आयोजित की गई थी। हिन्दी चेतना मास के दौरान संस्थान के अनेक संभागों/क्षेत्रीय केन्द्रों ने भी हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़े का आयोजन किया और हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित हुईं।

हिन्दी चेतना मास समारोह में उद्घाटन भाषण देते हुए डॉ. के. वि. प्रभु, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान)

'किसान – बेचारा या देश का सहारा' विषय पर पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण देते हुए एक प्रतिभागी

हिन्दी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता

संस्थान द्वारा 19 सितम्बर 2016 को 'किसान – बेचारा या देश का सहारा' विषय पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता आयोजित की गई। डॉ. रविन्द्र कौर, निदेशक (कार्यवाहक) व डॉ. के.वी. प्रभु, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। डॉ. कौर ने ख्याति प्राप्त निर्णायकों के पैनल जिसमें डॉ. जे.पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार), डॉ. प्रेमलता सिंह, अध्यक्ष, कृषि प्रसार संभाग, डॉ. अल्का सिंह, प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्र संभाग थे, का स्वागत किया। संस्थान के 19 वैज्ञानिकों तथा तकनीकी अधिकारियों ने पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण दिया। डॉ. जे.पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार) ने उच्च स्तर के प्रस्तुतीकरण के लिए प्रतिभागियों की प्रशंसा की तथा विजेताओं के नाम घोषित किए। प्रतियोगिता के विजेता हैं : डॉ. दिनेश कुमार शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, सेस्करा (प्रथम), डॉ. अतुल कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संभाग (द्वितीय), डॉ. बृज बिहारी शर्मा, वैज्ञानिक, सब्जी विज्ञान संभाग (तृतीय), डॉ. भूपेन्द्र सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, सेस्करा (चतुर्थ) और डॉ. राजेश कुमार, मुख्य तकनीकी अधिकारी, सूक्ष्मजीवविज्ञान संभाग (पंचम)।

पुरस्कार / सम्मान

- डॉ. वीरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, जल प्रौद्योगिकी केन्द्र को भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2015–16 के लिए विज्ञान प्रगति (जनवरी 2016 अंक) में प्रकाशित 'आखिर क्यों जरुरी है जैविक खेती' शीर्षक के एक लेख के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्हें यह पुरस्कार भारत के माननीय राष्ट्रपति डॉ. प्रणब मुखर्जी द्वारा 14 सितम्बर 2016 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के दौरान प्रदान किया गया।
- डॉ. जे.पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार); डॉ. सी.बी. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र, पूसा, बिहार; तथा श्री रणबीर सिंह, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, कृषि अभियांत्रिकी संभाग को भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2015–16 के लिए 'भारतीय कृषि : चुनौतियां एवं अवसर' शीर्षक की पुस्तक के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना के अंतर्गत सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें यह पुरस्कार 14 सितम्बर 2016 को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर प्रदान किया।
- डॉ. (सुश्री) नीलम पटेल, प्रधान वैज्ञानिक, जल प्रौद्योगिकी केन्द्र को मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी व

डॉ. जे.पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार) राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना के अंतर्गत भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करते हुए

मृदा–जल के अनुरूपण एवं मॉडलिंग की समझ के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए पंजाब राव देशमुख उत्कृष्ट महिला वैज्ञानिक पुरस्कार–2015 से सम्मानित किया गया।

- डॉ. कल्याण के. मंडल, प्रधान वैज्ञानिक, पादप रोगविज्ञान संभाग को इंडियन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा पादप रोगविज्ञान के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट अनुसंधान योगदान के लिए प्रो. जे.पी. वर्मा स्मारक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्रीमती कृष्णा यादव, डॉ. टी. मोहपात्रा, सचिव, डेयर व महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. से पंडित दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार प्राप्त करते हुए

पंडित दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार– 2016

दीनपुर, नजफगढ़, नई दिल्ली की एक उद्यमी कृषक व इस संस्थान की एक उद्यमशील महिला श्रीमती कृष्णा यादव को भा.कृ.अ.प. द्वारा आरंभ किए गए पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार, 2016 से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत प्रसंस्करण के साथ–साथ फलों एवं सब्जियों के मूल्यवर्धन में उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए प्रदान किया गया है। उन्होंने फलों व सब्जियों के लगभग 152 प्रकार के उत्पाद तैयार किए हैं तथा वे अन्य लोगों को रोजगार भी दे रही हैं। उन्होंने प्राकृतिक पूसा पेयों व सोयानट्स के लिए नवीन प्रौद्योगिकियों के वाणिज्यीकरण हेतु इस संस्थान के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किए हैं। वे प्रशिक्षण तथा मानव संसाधनों के विकास में भी सक्रिय रूप से शामिल हैं और इस प्रकार भारत के माननीय प्रधानमंत्री के कुशल भारत स्वप्न को पूरा करने में अपना योगदान दे रही हैं।

विदेशी अतिथि

जुलाई–सितम्बर अवधि के दौरान सूडान व चीन से आए एक–एक प्रतिनिधि मंडल अर्थात् दो प्रतिनिधि मंडलों ने संस्थान का दौरा किया। चीनी प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व महामहिम क्यू.यू. डोंगयू, वाइस मिनिस्टर फॉर एग्रीकल्चर ने किया।

सूडानी प्रतिनिधि मंडल भा.कृ.अ.सं. के दल से चर्चा करते हुए

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली–110012 की ओर से, प्रकाशन यूनिट द्वारा त्रैमासिक प्रकाशित तथा वीनस प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, बी–62/8, नारायणा इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–II, नई दिल्ली – 110 028 द्वारा मुद्रित।
संयुक्त निदेशक (अनुसंधान): डॉ. के.वि. प्रभु, सम्पादक एवं उप निदेशक (राजभाषा) : केशव देव वेबसाइट: http://www.iari.res.in